International Journal on Science and Technology (IJSAT)
E-ISSN: 2229-7677 ● Website: www.ijsat.org ● Email: editor@ijsat.org

हिंदी भाषा और साहित्य

Dr. J K Sreedivya

Asisstant Professor
Hindi
MPMMSN Trust College Shoranur

अभिषेक :

हिंदी भाषा और साहित्य भारत के प्रमुख आषा और साहित्य है जो सदियों पुराना है। हिंदी आषा और साहित्य का विकास विभिन्न काली में हुआ है जैसे आदिकाल, भक्ति काल, रीतिकाल और आधुनिक काल। हिंदी साहित्य में पर्यावरण चिंतन एक महत्वपूर्ण विषय है जिप्समें प्रकृति पर्यावरण और मानव के बीच संबंधों को आंध्ययन किया जाता है जिसमें प्रकृति का वर्णन पर्यावरण की चिंता मानव और प्रकृति का संबंध आदि है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श एक प्रमुख विषय है जिसमें स्थियों के अनुभव उनकी आवनाएं और उनके अधिकारों का अध्ययन जनी है जिसमें स्त्री की स्वतंत्रता स्त्री की आवनाएं स्त्री की प्रति समाज की दृष्टि मुख्यहै। हिंदी उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन प्रमुख है जिसमें समाज में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करता है जिसमें सामाजिक सुधार जाती प्रथन महिला शक्ति कारण आर्थिक परिवर्तनों को को ध्यान में रखता है और उनके बारे में विधार श्री करते है।

परिचय :

हिंदी आषा का विकास प्राचीन काल से ही हुआ था जब यह संस्कृत प्राकृत आषा ओ से प्रभावित थी। इस युग में पृथ्वीराज रासी खुमान रासी जैसे कवियों की रचनाएं दिखाने को मिलता है जहां राजाओं की वीरताओं का वर्णन मिलता है। अक्ति काल में हिंदी आषा का विकास अक्ति आंदोलन के दौरान हुआ था. कवियों ने हिंदी भाषा में अक्ति प्रदान कविताएं लिखनाशुरू किया। इसमें शगुन और निर्गुण अक्ति धारा के रचनाएं मिलते हैं जिनमें प्रमुख कवियों में कबीर दास, सूरदास, तुलसीदास आदि। रीतिकभान में श्रृंगारिक प्रधान रचनाएं दिखाई देते हैं जो मुख्य रूप से दरबारी कवियों द्वारा लिखी है जैसे देव भूषण, बिहार आदि। आधुनिक काल में हिंदी भाषा और साहित्य का विकाप्त हुआ जिसमें पति रचनाओं के साथ-साथ वृद्धि रचनाएं श्री मिलते हैं प्रमुख साहित्यकारों में नागार्जुन प्रेमचंद बच्चन आदि है। हिंदी भाषा और साहित्य आरतीय संस्कृति भारत की विविधता में एकता का प्रतीक है। साथ में हम रह सकते हैं की हिंदी आषा और साहित्य जान का एक स्रोत है।

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चिंतन एक महत्वपूर्ण विषय है जिसमें प्रकृति पर्यावरण और मानव के बीच के संबंधों के बारे में जाना जाता है ।जिसमें प्रकृति वर्णन, पर्यावरण की चिंता मानव और प्रकृति का

संबंध पर्यावरण शिक्षा आदि है। हिंदी साहित्य में प्रकृति का वर्णन एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें प्रकृति की सुंदरता दर्शाया जाता है। हिंदी साहित्य में पर्यावरण एक विषय है जिसमें पर्यावरण प्रदूषण जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण से संबंधित विभिन्न विषयों पर लेखनों और चर्चाएं होती है। मानव और प्रकृति के बीच के संबंध हिंदी साहित्य में पर्यावरण, जिसमें मानव प्रकृति के प्रति जिम्मेदारियां और प्रकृति की संरक्षण की आवश्यकताओं पर जोर दिया जाता है। पर्यावरण से संबंधित अनेक रचनाएं हमें हिंदी साहित्य में दिखाई देता है। पर्यावरण से संबंधित रचनाओं में प्रमुख है सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अजेय महादेवी वर्मा आदि।

हिंदी कविता में स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण विषय है जिसमें स्त्रियों के अनुभव उनकी भावनाएं उनके अधिकारों के बारे में चित्रित किया है। स्वी की स्वतंवला, स्त्री की आावनाएं, स्त्री के प्रति समाज की दृष्टि, स्वी की पहचान आदि की बात प्रमुख विषय है। स्त्री की आवनाजों का अध्ययन किया जाता है जिसमें दुख सुख खुशी संघर्ष को दर्शाया जाता है। कविताजों में स्त्री के पति समाज की दृष्टि रुठीवादी और पितृसत आत्मक दृष्टिकोण आदि पचित किया जाता है। कविताओं में स्त्री का स्थान घर में परिवार में समक्ष में स्त्री की पहचान स्वी की अस्तित्व आदि विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है । स्त्री विमर्श के प्रमुख कविडियों में प्रमुख है महादेवी वसी सुभद्रा कुमारी चौहान किशन कुमार अनामिका आदि।

विधि :

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चिन्ह का विश्लेषण करना अरूरी है जो कविताएं कहानियों उपन्यासों और निबंधों में पर्यावरण संबंधी विषयों का अध्ययन करना होगा महादेवी वर्मा की कविता कांग्रेस अध्ययन अधिवेशन में पर्यावरण चिन्ह का उदाहरण देखा जा सकता है जिससे प्रगति की सुंदरता और महत्व के बारे में चित्रित किया है।

हिंदी कविता में स्त्री विमर्श का अध्ययन करने के लिए पहाने स्वी विमर्श में स्त्रियों के अनुभवों उनके भावनाएं एवं अधिकारों का आंध्ययन कानाचाहिए। महादेवी वर्मा की कविता में नियर भारी दुख की साड़ी में स्त्री विमर्श देखा जा सकता है जिसमें स्त्री की भावनाओं और अनुभव को दर्शाया है।

हिंदी उपन्यासी में सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए हमें सामाजिक परिवर्तन का औ अवधारणा समझना होगा। उपन्यासू में सामाजिक संबंधी विषयों का अध्ययन करना है उदाहरण के लिए प्रेमचंद की उपन्यास गोदान में सामाजिक परिवर्तन देखा जा सकता है जिसमें समाज में व्याप्त गुरिंची हो और रूढ़िवादियों विचारों का विरोध किया है।

परिणाम :

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चिन्ह के परिणाम स्वरुप लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ी। माहित्य में प्रगति की सुंदरता और महत्व को दर्शाने वाले साहित्य की रचना ज्यादा हुई। उदाहरण महादेवी वर्मा की कविता कांग्रेस अधिवेशन।

हिंदी साहित्य में स्वी विमर्श के परिणाम स्वरूप स्थियों के अधिकारी और स्वतंत्रता

को स्थान मिला (हिंदी कविता में स्त्री आवनाजी और अनुभवों को चित्रित करने वाले साहित्यिक रचनाएं रथे। उदाहरण महादेवी तमी की कविता 'में नियर भारी दुख की साड़ी।

हिंदी उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन के परिणाम स्वरूप समाज में व्याप्त रठिया रुढ़ियों, कुरीतियों के प्रति जागरुकता बढी उदाहरण प्रेमचंद की उपन्यास" गोदान "में सामाजिक परिवर्तन देखा जा सकता है जिसमें समाज के व्याप्त रुढ़ियों और कुरीतियां के विरोध आवाज उठाया।

चर्चा :

हिंदी साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण के प्रति चिंता व्यक्त किया गया है। लेखकों ने प्रकृति की सुंदरता और महत्व को दिखाया है। हिंदी कविता में स्त्री विमर्श के माध्यम से स्त्रियों की भावनाओं और अनुभव को दिखाया है जिसमें उनकी भावनाएं और अधिकारों की चची की जाती है। हिंदी उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन के माध्यम से लेखन में समाज की वास्तविकता को दिखाया है जिसमें समाज में व्याप्त कुरीतिया और रूढ़िवादी विचारों का विरोध किया है।

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चिंतन, कविता में स्त्री विमर्श और हिंदी उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन तीनों साहित्य की विविधता और गहराई को दर्शाते हैं। इन विषयों के दद्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियी और रूढ़िवादी विधार का विरोध किया है. और स्त्रियों के अधिकारी और पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाई है।

संदर्भ सूची

१. हिंदी साहित्य का इतिहास (डॉ रामकुमार वभौ)
२. हिंदी साहित्य के प्रमुख कति (हाँ नागैद्र)
3 हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श (हैं रमा सिंह)
४ स्त्री शक्ति करण और हिंदी साहित्य (डॉ नीलिना सिंह)
५ हिंदी उपन्यास एक अध्ययन (डॉ नागेंद्र)
६. महादेवी वर्मा की कविता कांग्रेस अधिवेशन, में नौर भरी दुख की साड़ी।